www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान
शान्ति कुञ्ज हरिद्वार

बेटेवाले व्यर्थ ही घाटा और बदनामी न उठायें

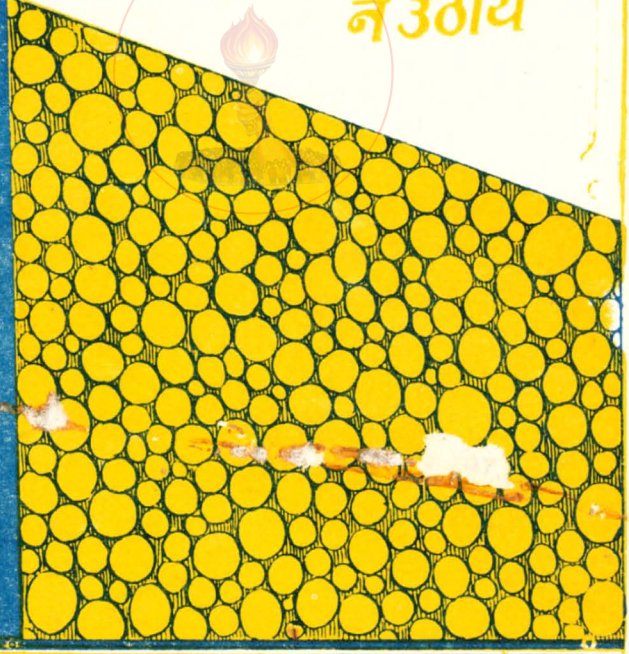

युग निर्माण योजना, मथुरा

लेखक श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेटे वाले व्यर्थ ही घाटा और बदमामी न उठायें

जब तक सामाजिक कुरीतियों के दुष्परिणामों पर ध्यान नहीं गया था तब तक कोई बात नहीं थी पर अब जब कि अधःपतन के कारणों की ढूँढ़ खोज की जा रही है और लेखा-जोखा लिया जा रहा है अब यह तथ्य सबके सामने आ गया है कि विवाह शादियों में होने वाले अपव्यय ने इस देश में बेईमानी, कर्जदारी, गरीबी और आर्थिक तथा नैतिक दुर्दशा को बेतरह बढ़ावा दिया है और इस कुप्रथा के रहते अपने समाज का अधःपतन रोका न जा सकेगा। तथ्य प्रकट होने के बाद हर विचारशील इस बात से सहमत है कि इस अनावश्यक अपव्यय की बेवकूफी को जितना जल्दी हो सके बन्द कर देना चाहिये। इस बढ़ती हुई मंहगाई के दिनों में जो लोग पुरातन पन्थ के नाम पर पैसे की होली फूँकने और मूर्खतापूर्ण धूम धड़क्का मचाने का समर्थन करते हैं उन्हें ओछा, अविवेकी दुष्ट और दुरात्मा ही कहकर घृणा की दृष्टि से देखा जाता है।

कोई जमाना था कि शादियों में धूम उडाने वाले रईस, अमीर समझे जाते थे पर आज तो उन्हें गरीब रहते अमीरी का स्वांग सजाने वाले प्रतिगामी गँवार मात्र कहा जाता है। पैसा अपना उड़ता है—बदले में प्रशंसा मिलने की अब कई गुंजायश नहीं रही, उलटा घृणा और भर्त्सना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का ठीकरा सिर पर फूटता है ऐसी दशामें घर फूँकतमाशा देखने का यह खेल पिछड़े जमाने का स्वाँग हो गया, अब उसे खेलने वाले कहीं भीप्रशंसा प्राप्त करने का आशा नहीं कर सकते। उलटे यही सुनने को मिलेगा कि कहीं से ब्लेक की—हराम की—कमाई हाथ लगी है जो इस बेदर्दी से उड़ाई जा रही है। अपना घर बेचकर अमीरी का स्वाँग रचा सो भी प्रशंसा तक न मिली, उलटा बदनामी का कारण बना तो फिर उसकी लकीर पीटने से क्या लाभ ! जो मर गया उसे जला ही देना चाहिये। खर्चीली शादियों की धूमधाम एक ऐसी मृतप्राय कुरीति है जिसकी लाश छाती से चिपकाये रहना व्यर्थ है। उचित यही है कि उसे सड़ाकर बदबू फैलाने का अवसर न देकर समय रहते जला या गाढ़ दिया जाय।

विवाहोन्माद में होने वाले अपव्यय का इन दिनों सारा दोष बेटे वाले पर थोपा जाता है। उन्हें कसाई और जल्लाद की उपमा दी जाती है। कहा जाता है कि यह लोग अपने लड़के का माँस बेचते हैं। कोई कहता है दुष्ट लोग कुछ समय पहले लड़कियाँ बेचकर मालदार बनते थे अब उन्होंने लड़के बेचने का धन्धा पकड़ा है। हो सकता है यह लोग अगले दिनों अपनी औरतें और माँ-बाप बेचने लगें, पैसे के लिये आदमी क्या कुकर्म नहीं करता। जिस घर से दहेज लिया गया है वे बाहरसे मिन्नतें करते हैं पर पेट में इतनी घृणा दबाये बैठे हैं कि बस चले तो इस बेटे के बाप समधी का छुरे से पेट चीर डालें और स्कूटर के लिये अड़े बैठे लड़के की नाक ही कतर लें। बेचारों की मजबूरी है, कि लड़की के हाथ पीले करने हैं इसलिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिर झुकाकर मेंमने को भेड़िये की शर्त माननी पड़ती है। पर भीतर ही भीतर कोसता वह भी यही है कि हत्यारे पर बिजली गिरे और उसका अंश-वंश मिट जाय।

इसी जल्लादी की कीमत पर खड़ी की गई दो दिन की धूमधाम निस्सन्देह हजार मुख से धिक्कारने लायक है। यह इतना मँहगा सौदा है जिसे खरीदने का साहस किसी भी समझदार बेटे वाले को नहीं करना चाहिए।

विचार करने की बात है कि क्या लड़के वालों को सचमुच इतना लाभ मिलता है जिसके लिए इस प्रगतिशील युग में दशों दिशाओं से बरसने वाली भर्त्सना का लोभ छोड़ सकना कठिन हो। बारीकी से देखने पर पता चलता है कि लड़के वाला अपनी जिद और मूर्खता मात्र के कारण बदनाम होता है पल्ले उसके भी कुछ नहीं पड़ता वरन् उलटा घाटे में रहता है। जो कुछ लड़की वाले ने दिया था वह तो अस्त-व्यस्त हो जाता है इसके अतिरिक्त उसे निश्चित रूप से कुछ घर से भी लगाना पड़ता है। बदनामी नफा कमाने वाले के रूप में हुई और वस्तुतः रहे घाटा उठाने वालों में।

लड़की वाले को कमर तोड़ खर्च करना पड़ता है। बारात की आवभगत,ज्योंनार, भेंट उपहार का खर्चा बहुत बढ़ा चढ़ा होता है। उसी में ढेरों पैसा लग जाता है,इसके बाद उन चीजों का नम्बर आता हैं जिन्हें भेंट उपहार की चीजें कहते हैं, कपड़े फर्नीचर, खिलौने, रङ्ग-विरङ्ग कपड़े बर्तन, शृंगारदान, रेडियो,घड़ी, पैन आदि ऐसी चोजें दी जाती हैं जो खरीदने वालेकी तो रकम खातो हैं पर जिसके घर गई हैं उसके लिये सर्वथा अनावश्यक औरनिरर्थकसिद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होती हैं, जगह घेरती हैं, कूड़े करकट की तरह पड़ी रहती हैं। दिखनौटी, विलासी चीजें बाजार में बेची भी नहीं जा सकतीं। उनका कुछ उपयोग भी नहीं। बेटेवाला बदनाम भी हुआ और उस कूड़े-करकट का कुछ लाभ भी न उठा सका। जेवर आदि जो मिलते हैं वे भी ऐसे हैं जिनकी आधी कीमत सुनार के पेट में पहले ही चली जाती है और जो बचती है उसे पहनने वाली औरतें दो चार वर्ष में तोड़ फोड़कर बराबर कर देती हैं। जो नगदी मिली उससे कहीं ज्यादा लड़की के लिये जेवर, कपड़े, शृंगार साधन, उपहार, मेवे मिठाई आदि खरीदने पड़ते हैं और बारात का किराया, आतिशबाजी, बाजा, दरवाजे की शोभा के नाम पर इतना खर्च होता है कि अपने घर पर होने वाली मेहमानदारी के साथ बहुत भारी पड़ती है। और उससे हर बेटे वाला घाटे में रहता है।

इस दृष्टि से बेटे वाला निसन्देह दया का पात्र है। उसने पैसे की दृष्टि से कुछ कमाया नहीं गँवाया। बदनामी इतनी सही कि विचारशील लोगों की दृष्टि में वह गाय मार डालने से भी बढ़कर है। दकियानूस, प्रगति विरोधी, कुरीति-पोषक, स्वार्थी, जल्लाद, हराम की कमाई खाने वाला आदि न जाने क्या-क्या कहलाया।

इन परिस्थितियों में हर बेटे वाले को नये दृष्टिकोण से रहना होगा और आदर्शवादी विवाह पद्धति अपना कर अपनी प्रगतिशीलता की प्रशंसा पाने और अपने तथा अपने सम्बन्धी के पैसे बचाने का कदम उठाना होगा। दावत या धूमधाम करना जरूरी हो तो बेटे वाला अपने घर और बेटी वाला अपने सम्बन्धी, मित्रों की आवभगत में कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता है। उसे बेटी वाले से कहना चाहिये—हम विवाह के अवसर पर एक आदमी एक जोड़ी साड़ी जम्फर लड़की के लिए लावेंगे। और बिना धूमधाम के विशुद्ध पारिवारिक उत्सव को धर्मानुष्ठान की तरह विवाह करके लड़की को विदा करा लायेंगे। विवाह के अवसर पर कोई प्रशंसनात्मक उपहार या नकदी स्वीकार न करेंगे। व्यर्थ की रस्म रिवाज और अलन चलन में पैसा तथा समय खराब न करेंगे, विवाह पूर्ण सादगी के वातावरण में होगा।

इस सन्देश से बेटी वाला यदि वज्र मूर्ख न हुआ तो खुशी-खुशी सहमति प्रकट करेगा और लड़के को एक अंगूठी, एक जोड़ी कपड़ा दस बरातियों के सत्कार जैसे कार्य में सौ-दो सौ रुपया खर्च करके आसानी से एक अग्नि परीक्षा जैसी चिन्ता से छूट जायगा। और उसे अपनी लड़की को कुछ देना ही होगा तो विवाहके दो चार महीने बाद बिना किसी दबाव या प्रदर्शन के लड़की को स्वेच्छा पूर्वक दे देगा, जो स्त्री-धन के रूप में कभी उसके काम आ सके। यह बाप-बेटी के बीच का आदान-प्रदान होगा इसमें दोनों पक्ष के लोग कुछ दिलचस्पी न लेंगे।

ऐसे आदर्श विवाहों का प्रचलन करने में बेटे वाले को पहल करनो चाहिए और जल्लादी पंक्ति में से अपना नाम कटाकर देवताओं में गणना करानी चाहिए। इससे उनका आर्थिक लाभ तो स्पष्ट ही है।

('विवाहोन्माद के लिए बुद्धि क्यों बेच दी जावे' पुस्तिका से)

★
★★★
★

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा। क्र० ३२

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org